रोज की 1 सलाह

आचार्य महाश्रमण

रोज की एक सलाह

आचार्य महाश्रमण

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं-३४१३०६
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (०१५८१) २२२०८०/२२४६७१
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

ISBN : 978-81-7195-203-8

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

संस्करण : प्रथम : जनवरी २०१२, उनतीसवां : दिसम्बर २०१४

मूल्य : ८०/- (अस्सी रुपये मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

हे प्रभो! यह तेरापंथ

vge

अच्छे आचार और अच्छे व्यवहार का

आधार है अच्छे विचार।

मनुष्य को अच्छे विचारों का अर्जन करना चाहिए।

'रोज की एक सलाह' से पाठकों को

अच्छे विचार प्राप्त हो सकेंगे, ऐसा विश्वास है।

आचार्य महाश्रमण

जनवरी

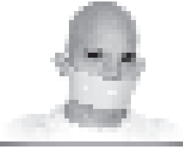

वर्ष आता है, चला जाता है।
यह कोई विशेष बात नहीं।
विशेष बात यही है कि हर वर्ष आदमी के
विकास का कालमान बने।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

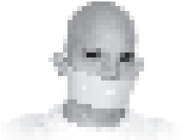

एक-दो घण्टे मौन करना भी अच्छा है।
किन्तु सबसे अच्छा है
अनावश्यक न बोलना।

जनवरी

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

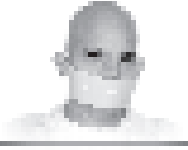

समय धन है।

उसका सदुपयोग करो।

व्यर्थ कार्यों में उसे व्यर्थ मत करो।

जनवरी

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

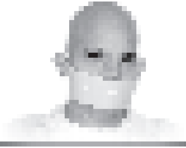

जिसे तुम अपना मित्र बनाते हो,
उसके साथ सच्चा हार्दिक संबंध कायम करो।
परस्पर एक-दूसरे का
हित करने का संकल्प करो।

जनवरी

01 02 03 **04** 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

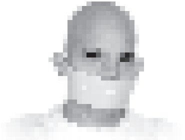

होठ रूपी द्वारों को
अनावश्यक खुलने ही मत दो।
फिर देखो,
तुम्हारे भीतर कितनी शक्ति और
शांति स्फुरित होती है।

जनवरी

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

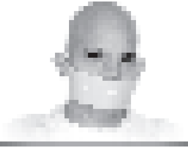

अपनी आकांक्षाओं को सीमित करो,
दुःख भी सीमित हो जाएगा।

जनवरी

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

वर्तमान में जीना सीखो।
अनावश्यक अतीत की स्मृतियों में बहने व
अनपेक्षित अनागत के आकाश में उड़ते रहने से
वर्तमान चुपके से निकल जाता है।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

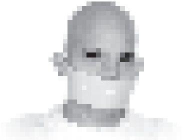

जीवन में एक संकल्प ऐसा रखो,
जिसे रखने के लिए
तुम अपने प्राणों का भी अर्पण कर सको।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

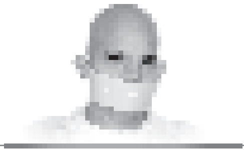

काम को जीतना महाकठिन
कार्य तो हो सकता है, पर असंभव नहीं।
लक्ष्य बनाओ।
काम के साथ युद्ध शुरु करो।
कभी अकाम बन जाओगे।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

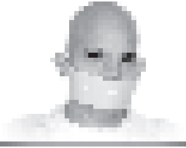

अव्यवस्थित दस काम करने की अपेक्षा
दो-तीन व्यवस्थित काम करना
ज्यादा लाभदायी हो सकता है।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

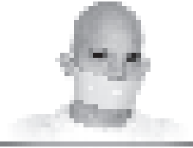

अंधकार से डरने की जरूरत नहीं।
डरना कोई समाधान भी नहीं।
बस एक छोटा-सा दीप जलाने की अपेक्षा है।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

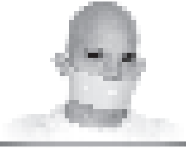

किसी को धोखा देना पाप है
तो किसी से धोखा खाना मूर्खता है।
न किसी से धोखा खाओ और
न किसी को धोखा दो।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 **12** 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

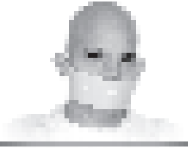

अपनी आलोचना का जवाब

जबान से नहीं,

अपने महत्त्वपूर्ण कार्यों से दो।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 **13** 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

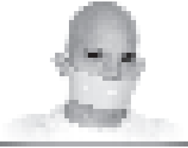

भाग्य की चिन्ता नहीं,

सत्पुरुषार्थ करो।

भाग्य स्वतः अच्छा हो जाएगा।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

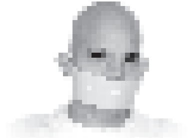

मृत्यु एक नियति है।
उसे टाला नहीं जा सकता।
वह कभी भी, कहीं भी, किसी की भी और
किसी भी अवस्था में हो सकती है।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

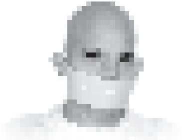

सामने वाले व्यक्ति की बात पर भी ध्यान दो।
उसमें भी कोई हित व कल्याण का तथ्य
प्राप्त हो सकता है।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

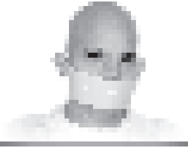

भलाई का काम करो,
भगवान की सच्ची भक्ति हो जाएगी।
तुम्हें अच्छी शक्ति मिल जाएगी।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

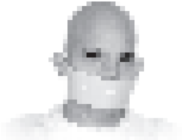

अपने आराध्य के प्रति
सर्वात्मना समर्पित हो जाओ।
फिर देखो,
मंजिल तुम्हारा स्वागत करने तैयार मिलेगी।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 **18** 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

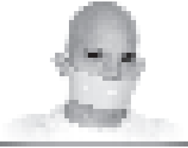

अनावश्यक न बोलना
उत्तम वक्तृत्व का एक रहस्य है।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

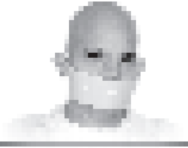

अतीत का पुरुषार्थ ही
वर्तमान व भविष्य का भाग्य बन जाता है।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

धन तुम्हारे अहंकार, विलास और
मूर्च्छा का कारण न बने।
यह सोचो, वह परोपकार का साधन
कैसे बन सकता है?

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

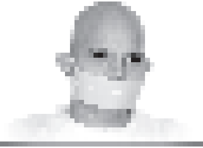

अपराध व नियमातिक्रमण का
एक कारण है अज्ञान।
ज्ञान का प्रदीप
अनेक समस्याओं का समाधान है।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

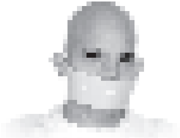

भाग्य से अधिक तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा।
फिर सद्भाग्य के नाशक
धोखाधड़ी, परकष्टदान जैसे तुच्छ कार्य
क्यों करने चाहिए?

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

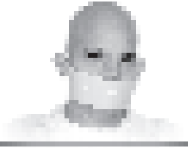

शान्तिमय जीवन का
पहला व प्रमुख सूत्र है - ईमानदारी।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

कट्टरता सर्वत्र बुरी नहीं होती।
वह बहुत अच्छी व आवश्यक भी होती है।
व्रत पालन आदि के संदर्भ में तो
कट्टरता अमृत है।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

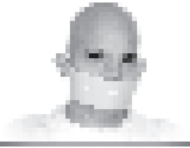

वाणी में विष और अमृत दोनों हैं।
सत्य, मधुर व हितकर वाणी
अमृत होती है और
मिथ्या, कटु व अहितकर वाणी
विष होती है।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

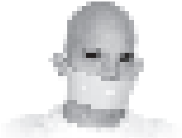

किसी की सेवा कर उसको गिनाना
सेवा के महत्त्व व फल को कम करना है।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

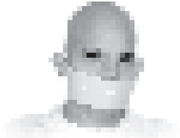

कायिक स्थिरता
ध्यान-साधना का आवश्यक अंग है।
उसे साध लो।
तुम्हें प्रथम चरण की सफलता मिल जाएगी।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

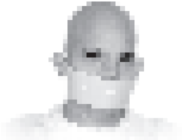

तुम दूसरों को किस प्रकार प्रभावित करते हो,
मुझे यह मत बताओ।
मुझे तो यह बताओ
तुमने अपने आपको प्रभावित करना
सीखा या नहीं?

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 **29** 30 31

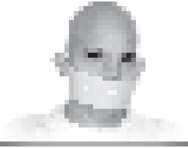

श्रद्धा का मतलब यह नहीं है कि
तुम गलत बात को पकड़ने के बाद
उसे छोड़ो ही नहीं।
श्रद्धा यह रखो कि
मैं गलत लगने वाली बात को
छोड़ भी सकता हूं।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 **30** 31

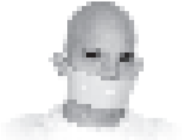

मृत्यु का होना निश्चित है।
पर कब होना प्रायः अनिश्चित है।
इसलिए सतत जागरूक रहते हुए
भले काम करते रहो।

जनवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 **31**

फरवरी

दूसरों को कष्ट पहुंचाना कदाचार है और
दूसरों को सुख पहुंचाना तथा
कष्ट न पहुंचाने का संकल्प सदाचार है।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

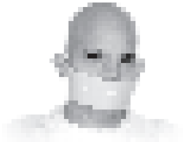

यदि अप्रमत्तता के साथ समय का
सदुपयोग किया जाए तो
ऐसी मंजिल नहीं,
जहां तक पहुंचा न जा सके।

फरवरी

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

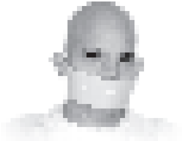

तुम कपड़ों को अच्छा रखने और
बालों को संवारने में ही
कला का प्रयोग करते हो या
जीवन को संवारने में भी कौशल दिखाओगे?

फरवरी

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

परिश्रम सही दिशा में हो, सफल हो,
इसके लिए किसी कार्य को करने से पूर्व
मन में दो प्रश्न उठने चाहिए—
'क्यों' और 'कैसे' ?

फरवरी

01 02 03 **04** 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

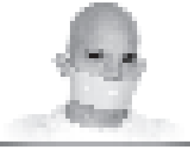

समझदार व्यक्ति
केवल भाग्य के भरोसे ही नहीं रहता और
न ही केवल पुरुषार्थ को महत्त्व देता है।
वह भाग्य और पुरुषार्थ दोनों को मानता है।

फरवरी

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

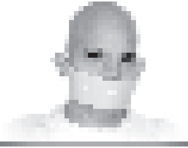

बीस जगह छोटे-छोटे गड्ढे खोदने की
अपेक्षा कहीं एक गहरा गड्ढा खोदो,
वह कुंआ होगा। तुम्हारी प्यास बुझाने वाला
जल तुम्हें प्रदान कर सकेगा।

फरवरी

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

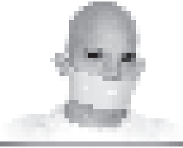

इस जीवन तक सीमित मत रहो।
अगले जीवन पर भी ध्यान दो।
इस जीवन में ऐसे काम मत करो,
जिससे तुम्हारी अगली गति खराब हो जाए।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

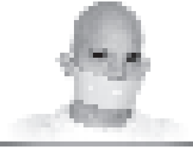

दुनिया में कितने लोग हैं,
जो ठीक तरह बोल भी नहीं पाते,
मूक हैं, अस्पष्ट भाषी हैं।
तुम्हें अच्छी तरह बोलने की शक्ति प्राप्त है।
इस शक्ति का दुरुपयोग मत करो।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

यदि आज के दिन तुमने सुकृत किया है
तो आज तुम्हारे लिए सुफल,
यदि दुष्कृत किया है
तो आज तुम्हारे लिए दुष्फल और
न सुकृत किया न दुष्कृत तो
आज का दिन तुम्हारे लिए निष्फल है।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

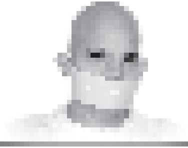

आपातपटु व परिणाम कटु कार्य करना
कोई बुद्धिमत्ता नहीं।
कार्य वह करो
जो परिणाम पटु हो,
भले आपात कटु भी क्यों न हो।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

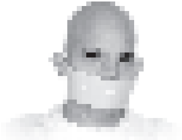

व्यक्ति अपनी शक्ति का
दुरुपयोग तो करे ही नहीं,
शक्ति का अनुपयोग भी न हो,
जितना हो सके वह अपनी
शक्ति का सदुपयोग ही करे।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

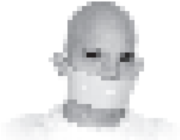

हर व्यक्ति के जीवन में
अच्छाइयां और कमियां दोनों होती हैं।
यदि कमियों को दूर करने और
अच्छाइयों को विकसित करने का
प्रयास होता है तो
जीवन अच्छा बन जाता है।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 **12** 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

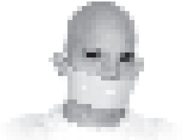

सही दिशा में
शक्ति का नियोजन करने वाला व्यक्ति ही
सफलता प्राप्त करता है।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 **13** 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

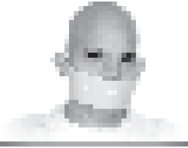

जो व्यक्ति
समय के मूल्य को पहचानते हैं,
वे समय पर अपना काम करते हैं और
सफलता अर्जित कर लेते हैं।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

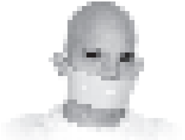

शरीर से मनुष्य होना विशेष बात है।
किन्तु आचार से, व्यवहार से मनुष्य होना,
मानव में मानवता का होना
विशेष बात होती है।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

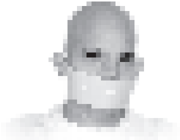

क्रोध करना बुरा है।
पर अपनी सेवा करने वालों पर व
गुरुजनों पर व्यर्थ क्रोध करना,
निष्कारण क्रोधाकुल हो जाना ज्यादा बुरा है।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

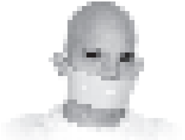

वर्षा आती है।
उत्तप्त मनुष्य शांति का अनुभव करता है।
इसी प्रकार समर्थ व्यक्ति
जब असमर्थों पर करुणा और कृपा की वर्षा
करते हैं तो उन्हें भी शांति मिलती है।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

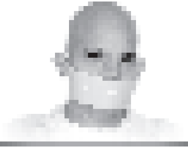

इस नश्वर जीवन में हो सके तो
किसी का भला करो,
किन्तु किसी का बुरा मत करो।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 **18** 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

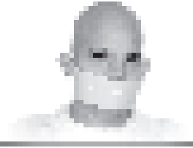

तुम्हारा दिमाग कूड़ादान नहीं,
प्रभु का पवित्र मन्दिर बना रहे।
इसलिए उसमें जो कुछ भी मत डालो,
अच्छी सामग्री ही अर्पित करो।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

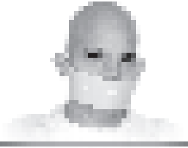

कर्म के साथ अकर्म को जोड़ो।
प्रवृत्ति के साथ निवृत्ति को जोड़ो।
भोग के साथ योग को जोड़ो।
फिर देखो तुम्हें कितना आनंद मिलता है।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

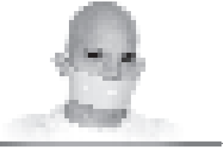

तुम विभिन्न मनुष्यों से मिलते हो,
साथ रहते हो।
तुम उनकी विशेषताओं को परख कर
उन्हें आत्मसात् करने का प्रयास करो।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

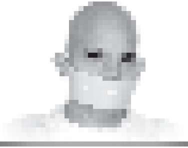

व्यक्ति के जीवन की
बहुत बड़ी उपलब्धि है—
सहज सतत प्रसन्नता।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

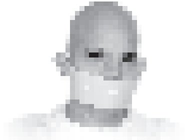

दूसरों को उपदेश देने से पूर्व
जरा यह भी आत्मालोचन करो कि
उपदेश का कितना अंश तुम्हारे जीवन में है ?

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

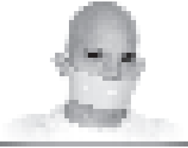

तुम दूसरों से आशीर्वाद मांगते हो।
जरा यह भी सोचो,
तुम्हें स्वयं का आशीर्वाद मिल रहा है या नहीं?
तुम्हारा पवित्र विचार और पवित्र आचार
तुम्हारा अपना आशीर्वाद है।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

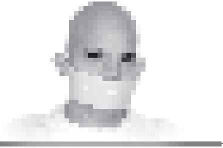

तुम दूसरों की बुराइयों को देखते हो।
जरा आंख मूंद यह भी खोजो
तुम्हारे में कितनी बुराइयां हैं?

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

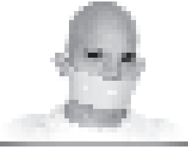

प्रियता और योग्यता भिन्न-भिन्न है।
तुम्हारा प्रिय है, इसलिए वह योग्य भी है
यह जरूरी नहीं है। इसलिए
दायित्व उसी को सौंपों जो योग्य हो,
भले तुम्हारा प्रिय न भी हो।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

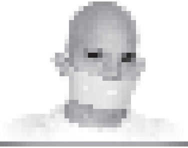

सातों सुख सबको मिले, यह
कठिन है। इसलिए सात में से ३/४/५
जितने भी सुख मिलें, उसी में संतुष्ट रहो।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

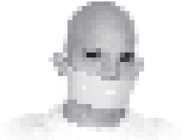

छोटा मान कर किसी की उपेक्षा मत करो।
हाथी की सूंड में प्रविष्ट एक छोटा गिरगिट
भी बड़ी समस्या का कारण बन सकता है।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

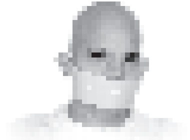

जिस व्यक्ति की चेतना
आत्मदर्शन की ओर अग्रसर हो जाती है,
उसके परदोषदर्शन के संस्कार
स्वतः छूट जाते हैं।

फरवरी

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 **29** 30 31

मार्च

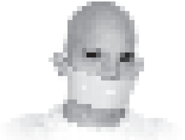

अर्थ का अर्जन शुद्ध साधन से किया जाए
व उसका सदुपयोग किया जाए तो
अर्थ सार्थक है
वरना वह अनर्थ है।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

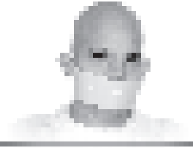

स्वाद के लिए खाना अज्ञान,
जीने के लिए खाना आवश्यकता और
संयम की रक्षा के लिए खाना साधना है।

मार्च

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

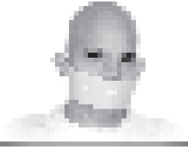

तन और मन की दूरी द्रव्य क्रिया है
और तन व मन की एकात्मकता
भाव क्रिया है।
भाव क्रिया का अभ्यास एक साधना है।

मार्च

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

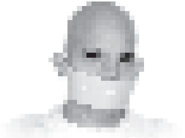

सद्‌व्यवहार सबके साथ करो।
विश्वास किसी योग्य का करो।
दुर्व्यवहार किसी के साथ मत करो।

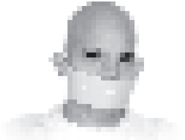

जो व्यक्ति सतत प्रयत्नशील रहता है,
जागरूकता के साथ परिश्रम करता है,
वह अपने सौभाग्य का निर्माण कर लेता है।

मार्च

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

स्पष्ट लक्ष्य के साथ जीने वाला व्यक्ति
अपने जीवन को सार्थक व
सुफल बना सकता है।

मार्च

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

अच्छाइयों के प्रति प्रेम पैदा कर लो।
फिर उनका आचरण आसान हो जाएगा।
बुराइयों से घृणा कर लो।
फिर उन्हें छोड़ना आसान हो जाएगा।

मार्च

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

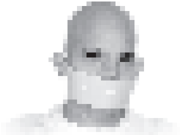

बीता हुआ समय पुनः नहीं मिलता।
अतः क्षण-क्षण का उपयोग करो।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

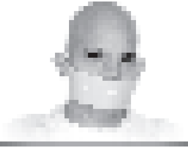

भविष्य भी उसी का अच्छा बनता है,
जिसका वर्तमान अच्छा होता है।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

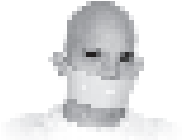

करने से पूर्व अच्छी तरह सोचो।
फिर जो होता है,
उसे प्रसन्नता से स्वीकार करो।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

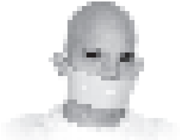

यदि दुनिया में ईमानदारी छा जाए
तो अनेक-अनेक समस्याओं को
जन्मने का मौका ही नहीं मिलेगा।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

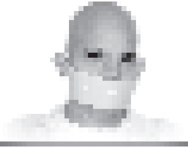

स्वार्थ से सर्वार्थ की दिशा में प्रस्थान व
प्रगति करने वाला
व्यक्ति महान् बनता है।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 **12** 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

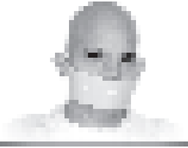

प्रसन्नता और विनम्रता से
चेहरे का सौन्दर्य बढ़ता है।
भय, क्रोध व शोक
चेहरे को विकृत बनाते हैं।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 **13** 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

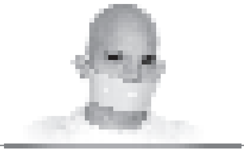

दूसरों का हित करने वाला
अपना हित स्वतः कर लेता है और
दूसरों का अहित करने वाला
अपना अहित कर लेता है।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

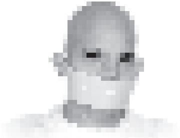

विद्या से विनय मिले,
यह तो जरूरी नहीं।
विनय से विद्या शोभायमान होती है।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

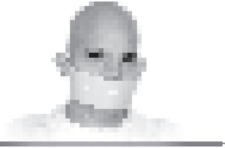

विनय करने वाला छोटा नहीं,
दुनिया का बड़ा आदमी होता है।
फिर विनय करने में संकोच क्यों होना चाहिए?

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

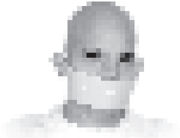

आवेश की स्थिति में
निर्णय गलत होने की संभावना रहती है,
अतः शान्त अवस्था में ही
चिन्तनपूर्वक निर्णय करना चाहिए।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

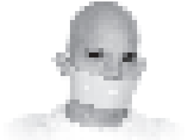

बाहर के मित्र भी उपयोगी बन सकते हैं।
भीतर के मित्र - अहिंसा आदि
परम उपयोगी होते हैं।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 **18** 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

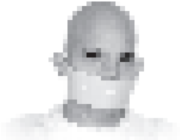

जो व्यक्ति आत्म-कल्याण का कार्य करता है,
प्राणी मात्र के प्रति प्रेम, मैत्री और करुणा के
भाव रखता है तथा स्वयं कष्ट झेलकर भी
दूसरों का हित करता है,
उसका जीवन धन्य बन जाता है और
उसकी मृत्यु भी धन्य बन जाती है।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

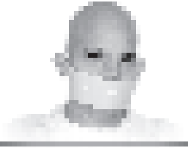

हम समता का कवच धारण कर लें।
फिर बाहर की परिस्थितियां हमें प्रभावित
नहीं कर सकेंगी, दुःखी नहीं बना सकेंगी।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

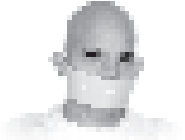

अच्छी चीज कहीं से भी मिले,
स्वीकार करनी चाहिए।
बुरी चीज कहीं भी हो उसका
परित्याग करना चाहिए।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

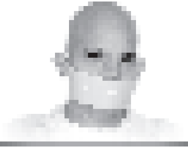

धर्म ही एकमात्र ऐसा मित्र है,
जो इहलोक और परलोक में साथ देता है,
दुर्गति से बचाता है और
चिरस्थायी सुख-शांति प्रदान करता है।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

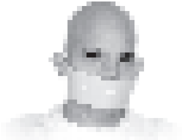

चिन्तन की स्वस्थता
चित्त को प्रसन्नता प्रदान करती है।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

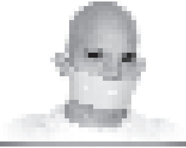

सद्‌विचार और सदाचार
सद्‌भाग्य का निर्माण करने वाले हैं।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

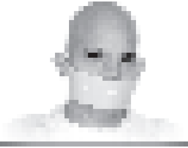

ध्वजा की प्रशंसा हो सकती है,
किन्तु नींव के पत्थर को भी
भुलाया नहीं जा सकता।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

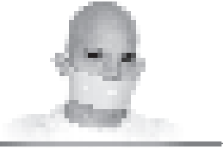

सत्साहित्य
चेतना की अच्छी खुराक है।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

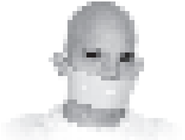

निरन्तर जागरूक रहने वाला व्यक्ति
जीवन का सही उपयोग करता है।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

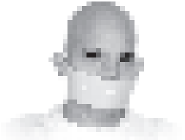

अपनी शक्ति का विकास करो।
दूसरों के भरोसे रहना उत्तम बात नहीं।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

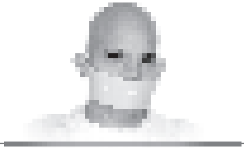

तुम्हारे सुख-दुःख के जिम्मेवार
तुम स्वयं हो।
दूसरे तो निमित्त मात्र हैं।
फिर उन पर आक्रोश क्यों करते हो?

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 **29** 30 31

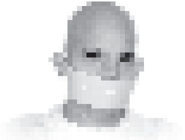

अप्रमाद एक परम तत्त्व है।
वह आध्यात्मिक और व्यावहारिक
दोनों दृष्टियों से लाभदायी है।
गलत कार्यों से बचना व
जागरूक रहना अप्रमाद है।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 **30** 31

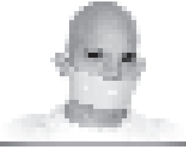

३१ मार्च व्यावसायिक दृष्टि से
वर्षान्त का दिन है।
व्यापारिक खातों में नफा-नुकसान का हिसाब
देखा जाता है। कितना अच्छा हो,
आत्मा का नफा-नुकसान भी देखा जाए।

मार्च

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 **31**

अप्रेल

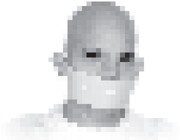

एक अप्रेल मूर्ख दिवस (Fool day)
के रूप में प्रसिद्ध है।
भला इसी में है कि आदमी
न स्वयं मूर्ख बने, न दूसरों को बनाए।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

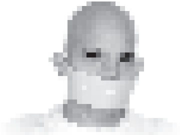

तुम सत्पुरुषार्थ करो,
गलत आचरणों से बचो,
अच्छे पुरुषार्थ से
भाग्य भी अच्छा बनता है।

अप्रेल

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

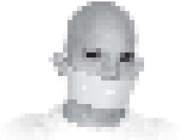

प्रत्येक कर्म के साथ
धर्म को जोड़ दिया जाए तो
धर्म के लिए अलग से
समय निकालने की जरूरत ही नहीं।

अप्रेल

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

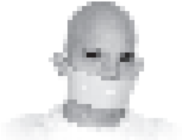

वह व्यक्ति निष्प्राण है,
जिसके जीवन में ईमानदारी का प्राण नहीं है।

अप्रेल

01 02 03 **04** 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

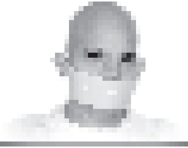

आदमी का शरीर स्वस्थ है।
इस स्थिति में वह खूब परोपकार करे,
यह शरीर की स्वस्थता का सदुपयोग है।

अप्रेल

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

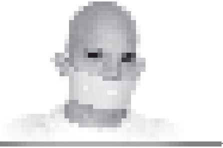

अनाग्रह अच्छा है पर
आग्रह भी सर्वत्र बुरा नहीं।
सत्य की खोज में अनाग्रह उपयोगी है और
प्राप्त सत्य की रक्षा के लिए
आग्रह भी लाभदायी है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

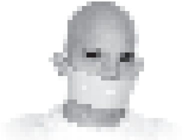

निश्चित समय, निश्चित स्थान,
निश्चित आसन में और निश्चित अवधि तक
भक्तिसंभृत भावना से अपने प्रभु में खो जाना
विशिष्ट सफलता का उपाय है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

सेवा एक महान् कार्य है।
उसके आध्यात्मिक और व्यावहारिक
दोनों लाभ हैं।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

कर्त्तव्यनिष्ठा बहुत बड़ा गुण है।
जिस आदमी का जो कर्त्तव्य है,
उसके निर्वाह में निष्ठा रहनी चाहिए।
कर्त्तव्य भिन्न-भिन्न हो सकता है पर
कर्त्तव्य निष्ठा सबमें उत्कृष्ट रहे,
यह काम्य है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

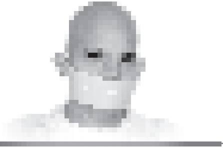

उतना और वही मिलेगा
जितना और जो तुम्हारे भाग्य में है।
न कम मिलेगा न ज्यादा।
फिर व्यर्थ चिन्ता क्यों करते हो?

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

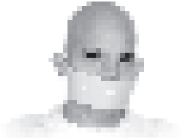

दूसरी कीमती चीजें यदि खो जाए तो
उन्हें दुबारा प्राप्त किया जा सकता है,
किन्तु समय एक ऐसी चीज है,
जिसे खोने के बाद
दुबारा कभी नहीं पाया जा सकता।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

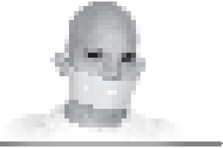

प्रबल पुण्य का उदय है तो
कोई तुम्हें मार नहीं सकता और
प्रबल पाप का उदय है तो
कोई तुम्हें बचा नहीं सकता।
तुम्हारे सुख-दुःख
के जिम्मेवार तुम स्वयं हो।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 **12** 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

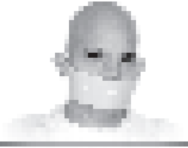

सत्य लगने वाली बात को भी
शांति के साथ प्रस्तुत करो।
आवेश अपने आप में असत्य ही है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 **13** 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

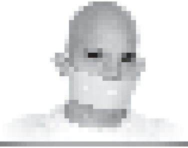

अपना अहित करने वाले का भी
कल्याण करने का प्रयास करना
परम मैत्री का प्रयोग है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

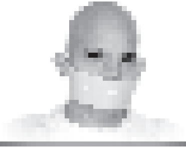

जब तक अज्ञानता की अनुभूति
नहीं होती,
तब तक व्यक्ति
ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

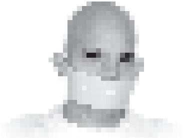

प्रार्थना

समर्पण, भक्ति व तल्लीनता के

साथ की जाए तो

उससे बहुत लाभ प्राप्त हो सकता है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

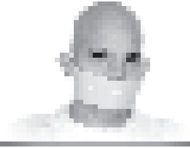

यदि मन मन्दिर में
ईमानदारी देवी की प्रतिष्ठा हो जाए तो
अन्य देवी-देवता तो
स्वयं आकृष्ट हो सकते हैं।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

दुनिया उसे चाहती है,
जो दुनिया का भला करता है।
दुनिया उसे नहीं चाहती,
जो मात्र अपना स्वार्थ साधने का
प्रयास करता है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 **18** 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

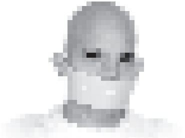

समस्या आए ही नहीं,
इस प्रकार की योजना बनाओ।
फिर भी समस्या आ जाए तो
उससे डरो मत।
शांत रहते हुए हल पाने का प्रयास करो।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

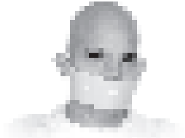

बीमारी को
पापकर्म बंध का कारण न बनने दें।
उसे निर्जरा का हेतु बनाएं।
उससे सम्प्रेरित हो
कोई पवित्र संकल्प ग्रहण करें।
बीमारी वरदायी बन सकेगी।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

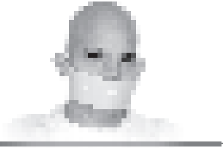

न तुम स्वयं डरो, न किसी को डराओ।
डरना दुर्बलता है तो
डराना स्पष्ट हिंसा का रूप है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

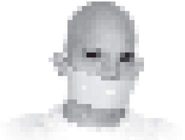

ईमानदारी से किया गया कार्य
प्रगति की ओर ले जाता है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

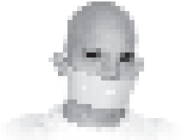

साधारण और प्रतिभाशाली व्यक्ति में
यही अंतर होता है कि
एक बाहरी आकर्षणों में खोया रहता है और
दूसरा आंतरिक यथार्थ में।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

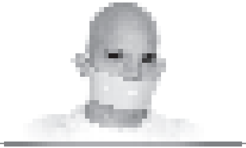

अपने उपकारी पर उपकार करना अच्छा है।
परन्तु अपकारी (अनिष्ट करने वाले) का भी
भला करने की भावना
महानता का लक्षण है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

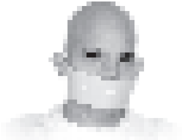

मित्र का कर्त्तव्य है कि
वह अपने मित्र को कठिन स्थिति में छोड़े नहीं।
उसे आत्मीयता व सहयोग प्रदान करे।
कठिनाई में छोड़ने वाला झूठा व
न छोड़ने वाला सच्चा मित्र है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

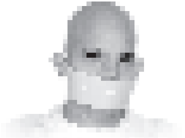

दूसरे के कहने से आदमी महान् नहीं बनता
व दूसरे के कहने से वह अधम नहीं बन जाता।
स्वयं को स्वयं के बारे में निर्णय करना चाहिए।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

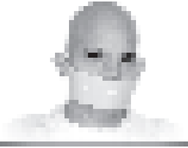

दूसरे के दुःख को
अपना मानकर चलने वाला व्यक्ति
महानता के पथ पर गति कर सकता है।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

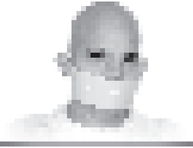

जिससे तुम सहयोग लेना चाहते हो,
उसके लिए तुम क्या करोगे ?
पहले यह निर्णय व संकल्प करो,
फिर उससे सहयोग लो ।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

तुम सम्मान पाने का
प्रयास मत करो।
सम्मान योग्य कार्य
आज से ही प्रारंभ करो।

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 **29** 30 31

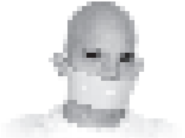

श्रम करो, पर निष्पत्तिपरक श्रम करो।
लक्ष्यहीन व अल्पफलप्रद श्रम से
क्या लाभ?

अप्रेल

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 **30** 31

मई

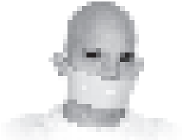

अपने आराध्य और कार्य के प्रति
निष्ठाशील रहो।
निष्ठाविहीन कार्य और आराध्य
तुम्हारा कितना भला कर पाएगा?

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

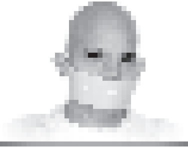

तात्कालिक लाभ को
अधिक महत्त्व मत दो।
धैर्य रखो व दीर्घकालिक लाभ पर
चिन्तन को केन्द्रित करो।

मई

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

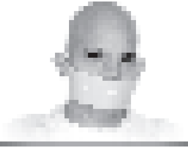

प्रतिकूलताओं को सहन करना सीखो।

उनसे दुःखी मत बनो।

फिर देखो तुम कितने सुखी बन जाओगे।

मई

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

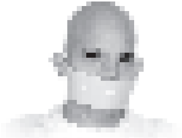

काम अच्छा करो।
प्रशंसा पाने का प्रयास मत करो।
प्रशंसा के क्षणिक सुख के लिए
शाश्वत सुख से दूर मत बनो।

मई

01 02 03 **04** 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

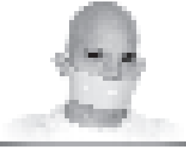

भावुकतावश तत्काल
कोई निर्णय मत करो।
परिणाम पर ध्यान देकर
विचारपूर्वक निर्णय करो।

मई

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

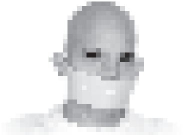

तात्कालिक प्रशंसा और तात्कालिक निन्दा
तुम्हारे कार्य का प्रमाण पत्र नहीं है।
यह सोचो स्थायी अथवा दीर्घकालिक परिणाम
क्या आने वाला है?

मई

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

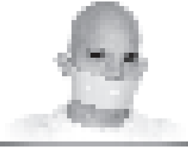

मृत्यु का होना तो निश्चित है,
पर कब होना अनिश्चित है।
इसलिए व्यक्ति को
नश्वर देह का आध्यात्मिक
उपयोग करने पर ध्यान देना चाहिए।

मई

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

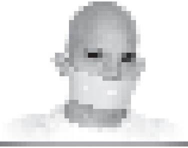

वे व्यक्ति महान् होते हैं,
जो दूसरों की भलाई के लिए
स्वयं कष्ट झेलने के लिए तत्पर रहते हैं।

मई

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

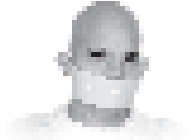

बोलना कोई बड़ी बात नहीं।
नहीं बोलना भी कोई बड़ी बात नहीं।
बोलने और न बोलने का
विवेक रखना बड़ी बात है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

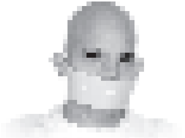

भोजन करना बड़ी बात नहीं।
भोजन न करना भी बड़ी बात नहीं।
भोजन करने और न करने में
विवेक रखना बड़ी बात है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

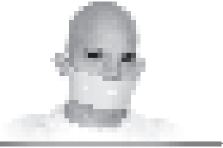

भावना, क्रिया और परिणाम की
एक श्रृंखला है।
कार्य का परिणाम प्रायः
भावना पर आधारित रहता है।
शुद्ध भावना से की गई क्रिया
शुभ परिणाम लाती है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

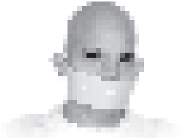

सामूहिक जीवन में
आत्मीयतापूर्ण, पवित्रतापूर्ण, मधुरतापूर्ण और
विनम्रतापूर्ण व्यवहार हो तो
मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हो सकता है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 **12** 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

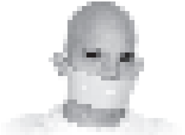

अगर हमारा मन
कठिनाइयों को झेलने के लिए
तैयार हो जाता है तो
कठिनाइयां हमें दुःखी नहीं बना सकती।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 **13** 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

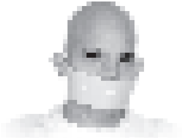

किसका है ? यह मत देखो।
क्या है ? इस पर ध्यान दो।
अच्छा विचार व अच्छी कृति,
फिर वह किसी की भी क्यों न हो,
स्वीकार कर लो।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

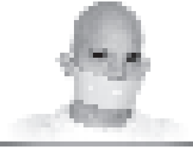

अपनी आवाज को सुनने वाला,
अपने आपको देखने वाला और
अपना हित चाहने वाला व्यक्ति
अपना मित्र होता है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

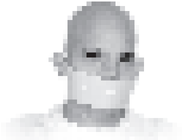

स्वयं के साथ
मित्रता करने वाला व्यक्ति
दूसरों के साथ गलत व्यवहार नहीं करता।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

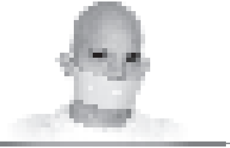

किसी के द्वारा प्रशंसित होने मात्र से
तुम बड़े नहीं हो और
किसी के द्वारा निन्दित होने मात्र से तुम
छोटे नहीं हो।
यह सोचो, तुम्हारे कार्य
महानता वाले हैं या अधमतावाले ?

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

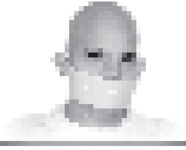

आकार छोटा है या बड़ा,
यह गौण बात है।
सार कितना है, यह मूल बात है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 **18** 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

जिसे किसी का भय नहीं होता,
वही वास्तव में वीर होता है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

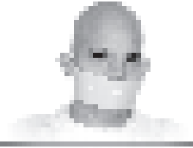

पद पर आकर व्यक्ति अगर
अच्छा कार्य करता है तो
पद श्रृंगार है, उपहार है, हार है।
वरना वह
भार है, धिक्कार है, निस्सार है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

जो व्यक्ति अपने प्रति जागरूक नहीं रहता,
प्रमाद में लगा रहता है,
उसे पग-पग पर
भय का सामना करना पड़ता है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

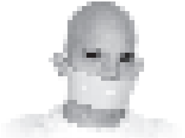

निष्ठा क्रिया की आत्मा है।
उसके बिना
महान् कार्य नहीं किया जा सकता।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

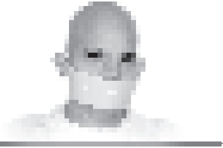

तुम दूसरों का भला कर सको
अथवा न भी कर सको।
पर दूसरों का बुरा न करने का
दृढ़ संकल्प करो।
भगवती अहिंसा तुम पर प्रसन्न होगी।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

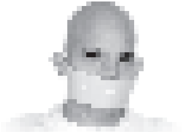

एकांत स्थान में साधना करने का मूल्य है,
पर भीड़ में रहकर भी
एकांत का-सा अनुभव करना
परम मूल्यवान् है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

शरीर नश्वर है, आत्मा अमर है।
शरीर एक दिन छूटने वाला है।
नश्वर शरीर की
सबसे बड़ी सार्थकता इसमें है कि
उससे अमर आत्मा का हित हो,
वैसा काम किया जाए।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

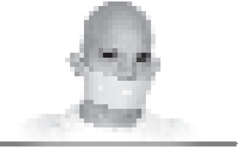

प्रातःपरिभ्रमण (Morning Walk)
अधिक सार्थक तब हो सकता है,
जब उस समय
दीर्घश्वास व विचार संयम का
अभ्यास किया जाए।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

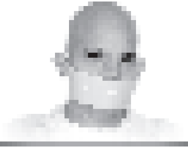

सात्त्विक प्रेम में कोई महाशक्ति निहित है।
जिसके द्वारा आदमी के
मन को भी जीता जा सकता है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

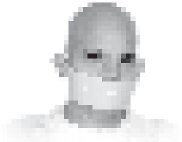

जीवन में जितना प्रमाद होता है,
व्यक्ति उतना ही असफल होता है
और जितना अप्रमाद होता है,
व्यक्ति उतना ही सफल बनता है।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

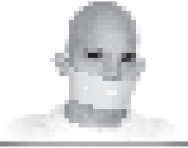

रोज सोने से पूर्व सोचो,
आज के दिन तुमने सुकृत क्या किया,
भला काम क्या किया ?
यह सोचना भी तुम्हारे लिए शुभ होगा।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 **29** 30 31

प्रवृत्ति को छोड़ना कठिन है,
परन्तु प्रवृत्ति में होने वाली
आसक्ति को छोड़ा जा सकता है।
फिर प्रवृत्ति तुम्हारी आत्मा को
मलिन बनाने वाली नहीं बनेगी।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 **30** 31

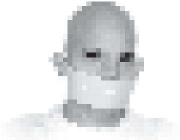

कठिनाइयां तो कहीं भी आ सकती हैं।
पर ऐसा मार्ग चुनो,
जिससे कठिनाइयों को झेलना
लाभदायी बन जाए।

मई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 **31**

जून

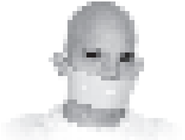

हर स्थिति अनुकूल बन जाए,
यह संभव नहीं।
इसलिए
तुम परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाना सीख लो,
फिर वे तुम्हें बाधित नहीं करेगी।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

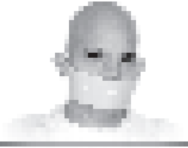

मौत एक वास्तविक अतिथि है।
वह बिना तिथि, दिनांक दिए ही आती है।
इस अतिथि के स्वागत की तैयारी
सदा ही रखनी चाहिए।

जून

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

निराश बनने में जल्दी मत करो।
ध्यान दो, कोई उपाय है क्या?
हो सकता है कि तुम्हें कोई मार्ग मिल जाए।

जून

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

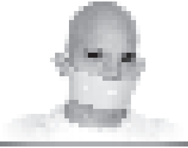

दीर्घ जीवन पाने की कामना से पूर्व
यह संकल्प करो
कि मैं परोपकारयुक्त जीवन जीऊंगा।

जून

01 02 03 **04** 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

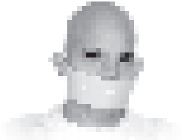

यदि समता का सुरक्षा कवच पास में है तो
कोई भी परिस्थिति
तुम्हें दुःखी नहीं बना सकती।

जून

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

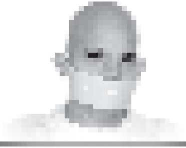

प्रसन्नता को निरंतर बनाए रखने के लिए
जरूरी है कि जो हो चुका
उसके लिए अनुताप मत करो।

जून

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

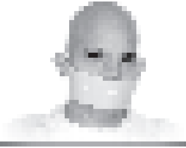

मधुर बोलना अच्छा है,
पर मधुरता के लिए झूठ बोलना
अच्छा नहीं है।

जून

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

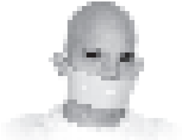

सोचकर करना और
करने के बाद सोचना
दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है।

जून

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

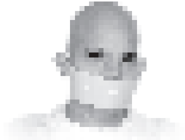

स्वदार संतोष (स्वपतिसंतोष) व्रत
यदि समाज अपना ले तो
युवा समाज में कितनी स्वस्थता आ जाए।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

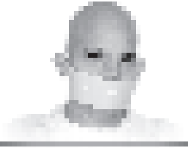

यदि एक बार में सफलता न मिले तो
हार मत मानो।
जब तक स्वल्प भी आशीकरण हो,
तुम सत्पुरुषार्थ करते रहो।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

जो व्यक्ति
करने में विवेक रखता है और
होने को सहज स्वीकार कर लेता है,
वह हर घटना में प्रसन्न रह सकता है।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

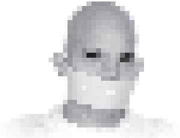

अनासक्त योग आत्मसात् हो जाए तो
दुःख का मूल ही उन्मूलित हो सकता है।
कार्य करो, पर लिप्त मत बनो।
पदार्थ का उपयोग करो, पर मूर्च्छा मत करो।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 **12** 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

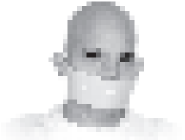

देह से भोग नहीं भोगना भी अच्छा है
पर भाव से भी भोग न भोगना अति
उत्तम है। केवल शरीर भोग त्यागी ही नहीं,
भाव भोग त्यागी भी बनो।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 **13** 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

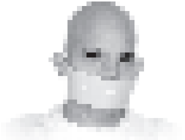

अपनी शक्ति को पहचानो।
उसकी रक्षा करो।
उसका विकास करो और
उसका सही उपयोग करो।
वह किसी के विनाश का साधन न बने,
किसी के विकास का माध्यम ही बने।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

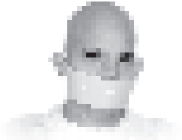

तुम स्वाध्याय करो।
उससे तीन लाभ हैं—
ज्ञान बढ़ता है,
वैराग्य बढ़ता है,
आचरण निर्मल बनता है।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

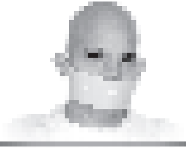

दायित्व हर किसी को मत सौंपो।
योग्य व्यक्ति का योग्य कार्य के लिए
नियोजन किया जाना चाहिए।
कुपात्र, सुपात्र व अपात्र का
सम्यक् विश्लेषण करो।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

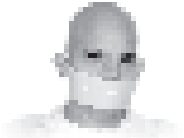

किसी भी समस्या के बारे

में चिंता मत करो,

व्यथा मत करो,

शांत भाव से

समाधान का पथ खोजने का प्रयास करो।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

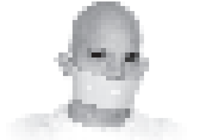

विनय-भक्ति वहीं तक उचित है,
जहां तक सत्य का हनन न हो।
सत्य को गौण कर विनय करना
मेरी दृष्टि में उचित नहीं।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 **18** 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

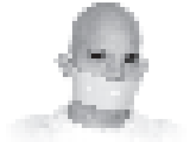

तुम ध्यान कितना करते हो, तुम जानो।
तुम ज्ञान कितना करते हो, तुम जानो।
मुझे बता सको तो पहले यह बताओ
तुम सेवा और पवित्र व्यवहार कितना करते हो ?

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

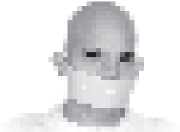

सारे सद्गुणों को
आत्मसात् करना संभव नहीं हो तो
चयनित सद्गुणों को
आत्मसात् करने का प्रयास करो।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

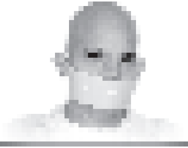

दीर्घकालीन नीति सोच-विचार कर बनाओ।
तात्कालिक स्थितियों के आधार पर
भावुक होकर उसमें परिवर्तन मत करो।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

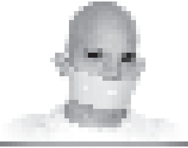

ज्ञाता-द्रष्टाभाव के अभ्यास से
व्यक्ति सुखी और प्रसन्न रह सकता है।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

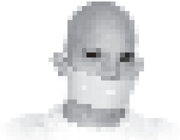

जब तक व्यक्ति
केवल ऊपरी भाग को देखता है,
भीतर तक पहुंचने का प्रयास नहीं करता,
तब तक समस्याओं का समाधान
नहीं हो सकता।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

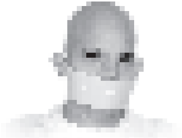

तुम दूसरों को
अपना मित्र बनाते हो,
भले बनाओ।
उसके साथ
स्वयं को भी स्वयं का मित्र बनाओ।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

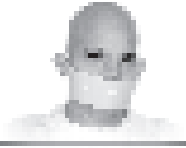

व्यवहार को सुधारने और बिगाड़ने में
भाषा बहुत बड़ा निमित्त बनती है।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

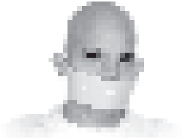

सुसंस्कार व बौद्धिक शिक्षा प्रदान करने वाले
एक विद्यालय को खोलने का अर्थ है–
एक जेल को बंद करने की तैयारी करना।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

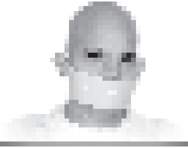

जिस व्यक्ति के दिल में
सरलता का वास होता है,
वह औरों के दिल में
अपना निवास बना लेता है।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

व्यक्ति आकृति से नहीं,
प्रकृति से अधम अथवा महान् बनता है।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

उच्च मनोबल वाला व्यक्ति
विपरीत परिस्थितियों में भी
अपना धैर्य नहीं खोता।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 **29** 30 31

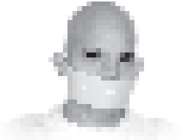

सौभाग्य का निर्माण करने के लिए जरूरी है कि
दुर्भाग्य का निर्माण करने वाले
प्रमाद से बचें।

जून

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 **30** 31

जुलाई

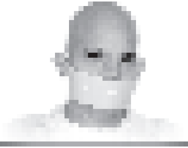

तुम कार्यकर्ता बनना चाहते हो।
यह अच्छी बात हो सकती है।
पर तुम यह सोचो–तुम्हारा अपने काम,
क्रोध व भय पर नियंत्रण है या नहीं?

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

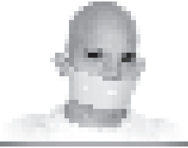

जो व्यक्ति घटना के साथ
खुद को जोड़ देता है
वह दुःखी बन जाता है और
जो केवल द्रष्टाभाव से घटना को देखता है
वह दुःख-मुक्त रह सकता है।

जुलाई

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

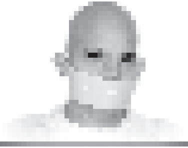

जो स्वयं पर अनुशासन नहीं कर सकता और
न ही अपने स्वामी के
अनुशासन में रह सकता है,
वह दुःख मुक्त कैसे बन सकता है ?

जुलाई

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

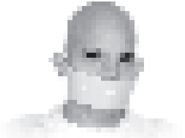

इस दुनिया में कोई स्थायी नहीं,
सब राही हैं।

जुलाई

01 02 03 **04** 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

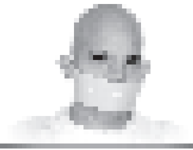

अधीनस्थों पर अनुशासन रखो, पर
उनकी उस स्वतंत्रता का भी हरण मत करो
जो उनके विकास व संगठन की व्यवस्था में
बाधक नहीं है।
स्वतंत्रता व परतंत्रता का योग आवश्यक है।

जुलाई

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

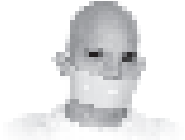

तुम्हें कष्ट अप्रिय लगता है तो
तुम एक संकल्प करो कि
तुम किसी को कष्ट नहीं दोगे व
यथासंभव दूसरों के कष्टों का
निवारण करने का प्रयास करोगे।

जुलाई

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

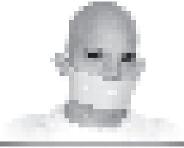

वह कितना मूर्ख आदमी है,
जो अपने बच्चों को तो भूखा रखता है
और दूसरों को रोटियां बांट
दानवीर कहलाने का प्रयास करता है।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

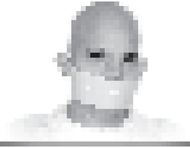

तुमने बहुत जाना होगा, पर
हेय (त्याज्य) और उपादेय (स्वीकार्य) का
विवेक करना नहीं जाना तो
तुम्हारे लिए बहुत जानना शेष है।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

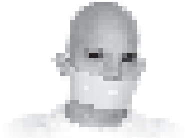

जो व्यक्ति प्रारम्भ में ही स्वतंत्र रहना चाहता है,
वह कभी स्वतंत्र नहीं रह सकता।
जो प्रारम्भ में अनुशासन में रहना सीख लेता है,
वह एक दिन स्वतंत्रता को प्राप्त कर लेता है।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

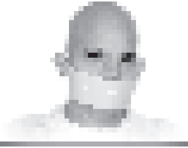

तुम अपने व्यवहार को शिष्ट बनाओ।
उसमें तीन बाधाएं हैं
स्वार्थ, दुराग्रह और आवेश।
इन बाधाओं का निराकरण करो,
व्यवहार शिष्ट बन सकेगा।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

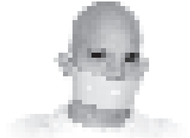

जन्म लेना दुनिया की सामान्य घटना है।
उस व्यक्ति का जन्म
अधिक महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट होता है,
जो संयम और परोपकार का जीवन जीता है।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

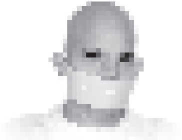

आत्मा पर
सीधा अनुशासन करने का प्रयास मत करो।
शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियों पर
अनुशासन करो।
उसका फलित होगा आत्मानुशासन।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 **12** 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

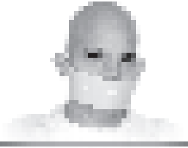

तपस्या का स्वरूप केवल अनाहार ही नहीं है।
उसके भीतर कितने रहस्य हैं,
उन्हें समझने का प्रयास करो।
वे जब समझ में आ जाएंगे तो
तुम्हारी तपस्या के प्रति
आस्था भी बढ़ जाएगी।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 **13** 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

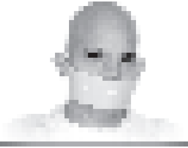

जिस संगठन में पारस्परिक व्यवहार
मृदुता व हितैषितापूर्ण होता है,
वह दीर्घजीवी बन जाता है।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

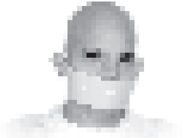

शरीर में व्याधि पैदा हो सकती है।
वह हमारे मन पर हावी न हो,
हमारा मनोबल उस पर हावी हो -
यह प्रयत्न करना चाहिए।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

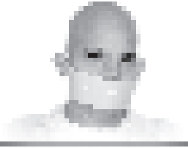

धरती का मोक्ष प्राप्त करो,
ऊपर का मोक्ष भी मिल जाएगा।
धरती का मोक्ष पाने के लिए
काम, क्रोध, मद व लोभ -
इन विकारों से मुक्त बनना होगा।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

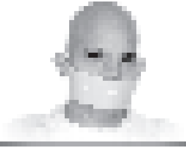

माया, कपट अविश्वास का कारण है।
जहां सरलता है,
उस व्यक्ति का विश्वास किया जा सकता है।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

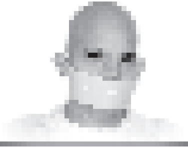

इन्द्रियां संयमित होती हैं तो
आत्मरक्षा स्वतः होने लगती है।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 **18** 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

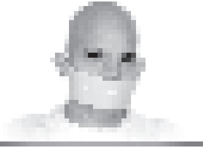

उपासना से
वासना का नाश किया जा सकता है।
बशर्तें कि उपासना में
सम्यक् लक्ष्य, सम्यक् विधि और
सम्यक् निष्ठा हो।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

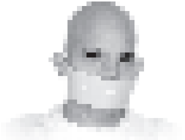

सामंजस्य बिठाने के लिए
कुछ काट-छांट की अपेक्षा रहती है।
बढ़ई काट-छांट के आधार पर
एक द्वार को चौखट में जमा देता है।
व्यवहार में अनेक व्यक्तियों को जमाने के लिए
आग्रह व आवेश की कांट-छांट आवश्यक है।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

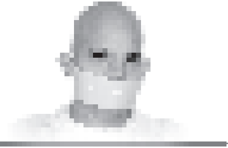

तुम तपस्या नहीं कर सकते हो तो
तपस्या करने वालों की अनुमोदना तो करो तथा
यथासंभव तपस्या करने वालों का सहयोग करो।
अनुमोदन व सहयोग भी
तुम्हें सुकृतभाग बना सकेंगे।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

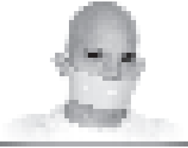

पुण्य का उदय काल अच्छा लगता है।
उसमें अनुकूलता प्राप्त होती है।
किन्तु पुण्यवान् व्यक्ति के लिए ध्यातव्य है कि
उसका पुण्य आगामी पाप का निमित्त न बने,
यानी पुण्योदय काल में संयम रहे।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

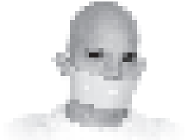

समय-नियोजन व्यवस्थित जीवन का
एक महत्त्वपूर्ण अंग है।
दिनचर्या को निर्धारित रखो,
काम अच्छा होगा।
'समय पर काम करो'
इस सूत्र को अजमाकर देखो कि
दिन कितना व्यवस्थित बीतता है?

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

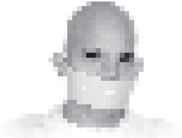

मौत से डरो मत,
पर प्रेरणा लो।
ऐसा जीवन जीओ,
जिससे तुम्हारा अगला जन्म भी
अच्छा हो सके।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

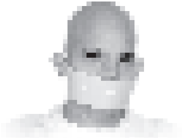

तुम आवेश भी करते हो,
कभी शांतिपूर्ण व्यवहार भी करते हो।
स्वयं फैसला करो
आवेश सफलता का हेतु बनता है या शांति।
यदि शांति अधिक सफलतादायी है तो
उसका अभ्यास क्यों नहीं करते?

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

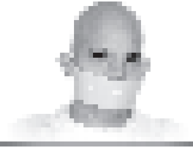

एक अच्छा संकल्प भी
अनेक समस्याओं से
बचाने वाला हो सकता है।
अपेक्षा है कि उसका निष्ठा के साथ पालन हो।
वह तुम्हारा अभिन्न मित्र व सच्चा मित्र होगा।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

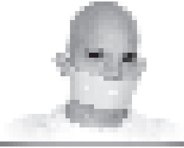

मौत से मरने वाला व्यक्ति तो
एक बार मरता है।
मौत का भय रखने वाला व
डर की संवेदना रखने वाला
एक दिन में ही मौत से
अनेक बार मर जाता है।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

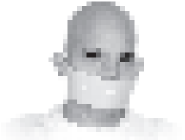

एक प्रमुख आदमी अनेक व्यक्तियों को
प्रमुख बनने के योग्य बनाए,
उनका निर्माण करे तो
समाज व देश कितना
शक्तिशाली बन जाएगा।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

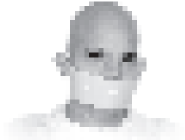

अपना दर्द मिटाने का प्रयास करने वाले
व्यक्तियों से संसार भरा पड़ा है।
ऐसे कितने व्यक्ति हैं,
जो दूसरों का दर्द मिटाने के लिए
कृतसंकल्प होते हैं।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 **29** 30 31

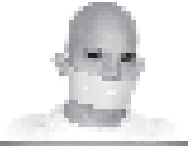

अनुशासन के अभाव में
विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 **30** 31

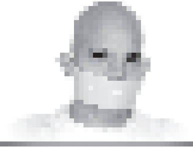

दो जीवन-शैलियां हैं -

१. अहिंसा प्रधान जीवनशैली

२. हिंसा प्रधान जीवनशैली।

पहली जीवनशैली शांति का मार्ग है।

दूसरी जीवनशैली अशांति का मार्ग है।

तुम किसे चुनना चाहोगे?

जुलाई

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 **31**

अगस्त

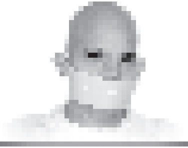

अचिन्तित बात कहनी नहीं चाहिए और
सुचिन्तित बात पर डटकर रहना चाहिए।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

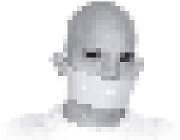

ईमानदारी के प्रति
सघन आस्था व उसका अनुपालन
जहां स्वयं की आत्मा के लिए कल्याणकारी है
वहीं समाज-व्यवस्था को
स्वस्थ बनाने वाला है।

अगस्त

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

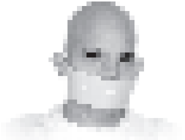

परिष्कार करते-करते मनुष्य
भगवान भी बन सकता है।
जीवन को सफल बनाने के लिए
आदमी को अपने विचार, आचार व व्यवहार में
अपेक्षित परिष्कार करते रहना चाहिए।

अगस्त

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

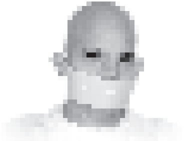

मुख को साफ रखना चाहिए।
उसके लिए कुल्ला ही नहीं,
वाक्संयम और खाद्यसंयम भी आवश्यक है।

अगस्त

01 02 03 **04** 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

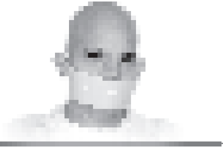

सत्य और अहिंसा के पालन के लिए
अभय का होना भी आवश्यक है।
उसके बिना आदमी
हिंसा व असत्यभाषण में प्रवृत्त हो जाता है।

अगस्त

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

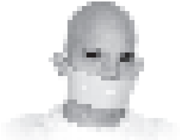

शारीरिक कठिनाई में यदि
मनोबल होता है तो
शरीर-कष्ट को झेलना आसान होता है।
मनोबल के अभाव में
सामान्य स्थिति को झेलना भी
मुश्किल हो जाता है।

अगस्त

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

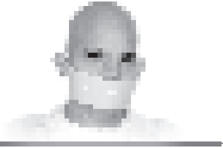

धनवान मनुष्य धन के प्रति आसक्ति न रखे,
उसका दुरुपयोग व अहंकार न करे तो
वह धनवान होने के साथ
सद्गुणवान भी होता है।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

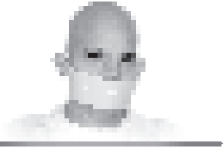

कार्य की दृष्टि से व्यस्त रहना अच्छा है,
पर व्यस्तता हमारे दिमाग में नहीं होनी चाहिए।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

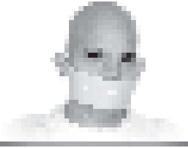

वाणी का संयम और
सम्यक् प्रयोग करने वाला व्यक्ति
आत्मानुशासन की दिशा में
अग्रसर हो सकता है।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

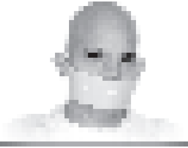

जीना कोई विशेष बात नहीं,
विशेष बात है
कलात्मक जीवन जीना।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

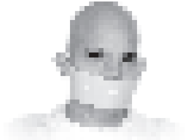

अभय के साथ क्षमा का योग है तो
वह अभय का अलंकार है, शृंगार है।
यदि उसके साथ आक्रोश जुड़ जाता है तो
वह धब्बे वाला वस्त्र जैसा बन जाता है।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

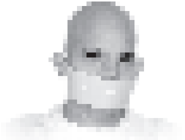

आलस्य एक ऐसी कमजोरी है,
जो विकास में बाधक बनती है और
श्रम एक ऐसा सद्‌गुण है,
जो सफलता का द्वार खोलता है।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 **12** 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

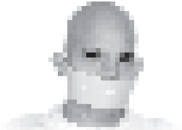

बीमारी से
शरीर कभी प्रभावित हो सकता है, परन्तु मनुष्य
अपने मन को उससे प्रभावित न होने दे।

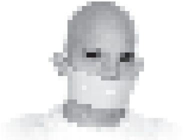

विद्यालय एक पवित्र मन्दिर है।
जहां विद्या उपास्य, विद्यार्थी उपासक और
शिक्षक एक पुजारी है।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

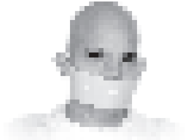

दूसरों की उन्नति देखकर नाखुश मत बनो,
अपितु 'मैं भी विकास करूं और
दूसरे भी विकास करें'
यह भावना रखो।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

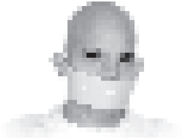

सत्य की साधना करने के
इच्छुक व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि
वह क्रोध, लोभ, भय और हास्य पर भी
नियंत्रण करे।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

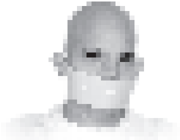

किए हुए पाप का फल
अवश्य मिलता है - यह मान कर चलो और
पाप-कार्यों से बचो।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

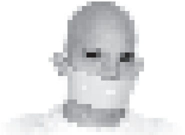

आकांक्षापूर्ति और अपेक्षापूर्ति
दोनों में बड़ा अन्तर है।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

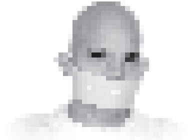

जिन्हें वाणी की शक्ति प्राप्त है,
वे उसका दुरुपयोग न करें।
अपितु उचित, मधुर और यथार्थ भाषा में
उसका प्रयोग करें।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

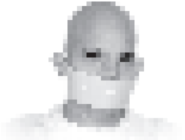

भाव शोधन सबसे बड़ा धर्म है।
वह किसी सम्प्रदाय की सीमा में आबद्ध नहीं।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

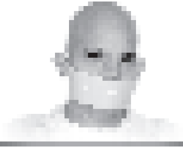

सपने कभी पूरे नहीं होते,
संकल्प पूरे होते हैं।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

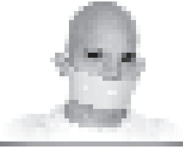

कठिनाई की स्थिति में भी
सत्यनिष्ठा, मनोबल और सत्पुरुषार्थ
श्रेयस्कर होते हैं।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

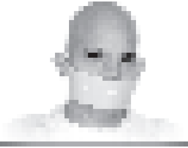

संघर्षों से कतराने वाला
अपने विकास में अवरोधक बनता है।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

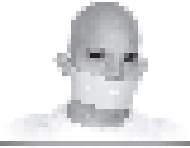

एक बड़ी कठिनाई को झेलने का मतलब है
विकास के सूर्य की तरफ
एक छलांग भर लेना।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

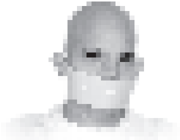

तुम दूसरों के आशीर्वाद की अपेक्षा रखते हो,
पर क्या स्वयं सम्यक् पुरुषार्थ करते हो ?

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

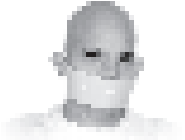

धर्म के अनेक आयाम हैं।
समता को आत्मसात् कर लेने से
उन सब की आराधना सहज हो जाती है।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

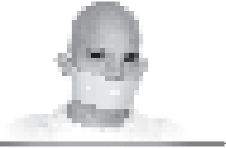

बिना सोचे-समझे
सहसा किया गया कार्य
अनर्थकारी हो सकता है।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

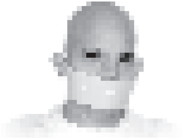

हर वक्त चिन्तनरत मत रहो।

चिन्तन के समय चिन्तन करो,

दत्तचित्त होकर करो,

इससे अन्य कार्य भी बाधित नहीं होंगे,

चिन्तन भी अच्छा होगा।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

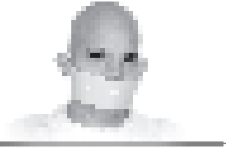

क्रोध तुम्हारा शत्रु है,
उससे सावधान रहो।
तुम्हारा चिन्तन, निर्णय व व्यवहार का
एक बाधक तत्त्व निराकृत हो सकेगा।

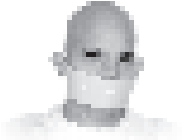

मूल कारण को खोजे बिना
समस्या का समाधान कभी नहीं हो सकता।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 **30** 31

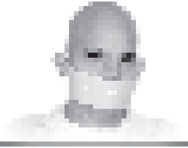

जिसके पास अपनी समझ नहीं,

वह व्यक्ति दुर्बल है।

अगस्त

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 **31**

सितम्बर

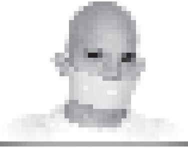

सत्य के अनन्त आकाश में उड़ान भरने के लिए
अनाग्रह व खोजवृत्ति -
इन दो पंखों की आवश्यकता है।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

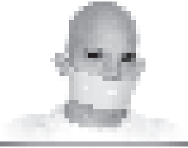

अपने शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियों पर
अनुशासन करने वाला व्यक्ति
जीवन में विकास कर सकता है।

सितम्बर

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

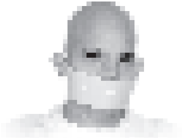

तात्कालिक प्रतिक्रिया की परवाह मत करो,
दीर्घकालिक निष्पत्ति पर अधिक ध्यान दो।

सितम्बर

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

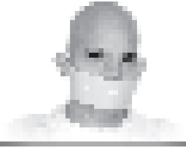

जिसके पास सत्य है,
उसकी आत्मा पवित्र रहती है।

सितम्बर

01 02 03 **04** 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

दूसरे कोई जाने या न जाने,
तुम अपने आचार को निर्मल रखो,
तुम्हारा कल्याण हो जाएगा।

सितम्बर

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

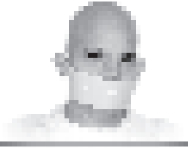

सारी विशेषताओं से सम्पन्न होना कठिन हो तो
कुछ को चयनित करो और
उन्हें आत्मसात् करने का प्रयास करो।

सितम्बर

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

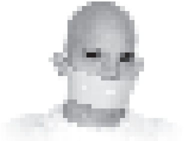

दुनिया में सुन्दर कार्य बहुत हैं।
उन सबमें हाथ डालने से
ठोस निष्पत्ति न भी आए।
कुछ चयनित कार्यों को हाथ में लो और
उनमें योजनाबद्ध शक्ति-नियोजन करो।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

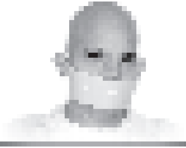

तुम दूसरों को पहचानो
इसमें आपत्ति नहीं पर
स्वयं को भी पहचानने का प्रयास करो।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

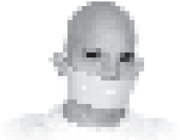

अपराध व अन्याय करो मत और
न्याय के पथ पर चलने से डरो मत।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

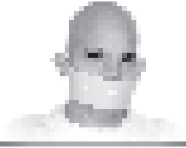

गृहस्थ को धन चाहिए,
पर धर्म भी साथ में रहना चाहिए।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

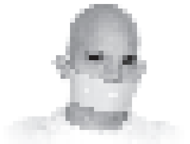

समुचित पारस्परिक सहयोग से
संगठन को वह प्राण ऊर्जा मिलती है,
जो उसे दीर्घजीवी बनाने में
कामयाब सिद्ध होती है।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

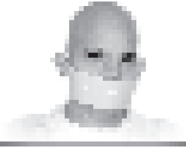

किसी सामाजिक संस्था के लिए चार
शक्तियां अपेक्षित होती हैं -

Man Power,

Money Power,

Management Power,

Morality Power.

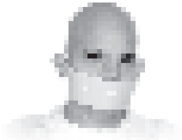

जब तक सक्षम हो, खूब सेवा कर लो।
अक्षम होने के बाद
तुम सेवा लेने के अधिकारी बन जाओगे।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 **13** 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

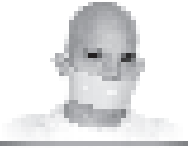

अपनी सारी कमियों को
एक साथ न छोड़ सको तो
एक-एक कमी को दूर करने का प्रयास करो।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

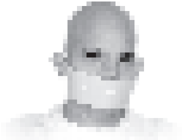

एक पाप करना पड़ जाए तो
झूठ बोलकर दूसरा पाप तो मत करो।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

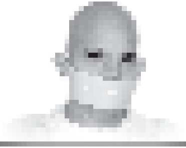

तटस्थ समीक्षा करना सीखो।

न इधर झुको,

न उधर झुको।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

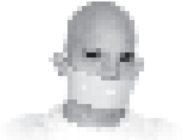

किसी संगठन का वर्तमान मुखिया
वर्तमान को अच्छा रखे ही,
पर भविष्य भी निर्बाध रह सके,
ऐसा प्रयास करे।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

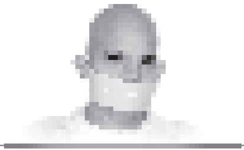

धन के अर्जन में नैतिकता,
रक्षण में अनासक्ति और
उपयोग में संयम व विवेक हो तो
अर्थ सार्थक हो सकता है।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 **18** 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

जिसमें विनम्रता, अनाग्रह और
सामंजस्य की भावना होती है,
वह सफल हो सकता है।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

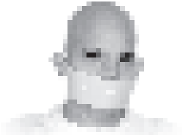

तुम्हारा जन्मदिन आता है तुम खुशी मनाते हो,
पर यह भी सोचो
हर वर्ष तुम्हारा जीवन-काल
एक-एक वर्ष कम होता जा रहा है।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

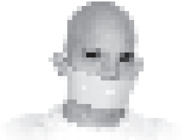

धनवान का ज्यादा महत्त्व नहीं होता।
जो उदार होता है,
उसका महत्त्व ज्यादा होता है।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

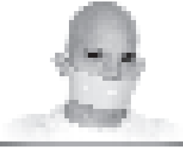

नाम-ख्याति की भावना से
मुक्त रहते हुए सेवा करो।
उसमें पुनीतता आ जाएगी।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

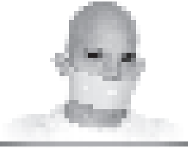

धीरे-धीरे खाने वाले व्यक्ति में
खाद्य संयम सरलता से
आत्मसात् हो सकता है।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

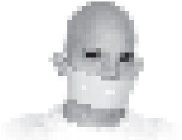

दूसरे लोग झूठी आलोचना करते हैं।
यदि उस समय व्यक्ति संतुलित रहता हैं तो
आज के आलोचक कल उसके
प्रशंसक बन सकते हैं।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

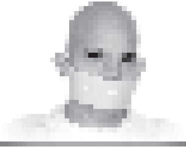

खाने में आनन्द आता है,
न खाने के आनन्द का भी अनुभव करो।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

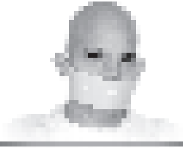

झूठ बोलकर अपना बचाव करते हो,
सत्य के द्वारा
अपनी आत्मा का बचाव भी करो।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

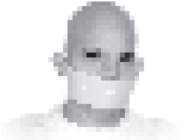

भोग में आनन्द मनाते हो,

योग के

अलौकिक आनन्द का भी अनुभव करो।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

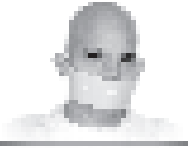

आलस्य व आराम में सुख मानते हो।
परिश्रम से होने वाले
सुख का भी अनुभव करो।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

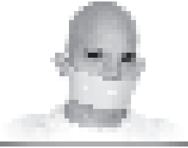

बातों में रसानुभूति करते हो,
मौन के
सुख का भी अनुभव करो।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 **29** 30 31

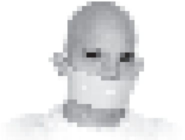

चिन्तन में रस लेते हो,

अचिन्तन के परम रस का भी अनुभव करो।

सितम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 **30** 31

अक्टूबर

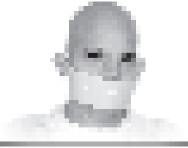

पदार्थों में सुख खोजते हो,
पदार्थातीत सुख का भी अन्वेषण करो।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

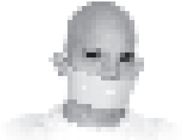

महापुरुषों के जीवन वृत्त पढ़ो और
स्वयं को महापुरुष के रूप में गढ़ो।

अक्टूबर

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

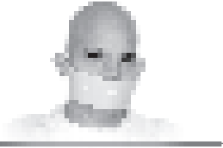

व्यस्त रहो पर
अस्त-व्यस्त मत रहो,
शांति से कार्य करते रहो।

अक्टूबर

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

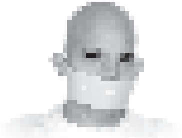

अपने ज्ञान का उदारता के
साथ
दान करो, तुम्हें भी लाभ होगा।

अक्टूबर

01 02 03 **04** 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

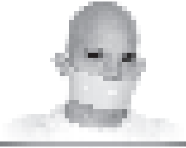

परानुशासन की तब तक उपयोगिता है,
जब तक व्यक्ति का आत्मानुशासन
नहीं जागता।

अक्टूबर

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

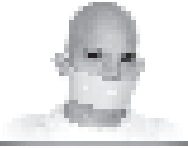

विद्या, विनय, विवेक
इस त्रयी में विद्यार्थी निष्णात बनें।
वे अधिक उपयोगी बन पाएंगे।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

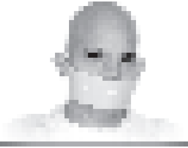

केवल भावना के आधार पर
मत चलो।
विवेक की चलनी में
भावना को छानकर
उसे क्रियान्वित करो।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

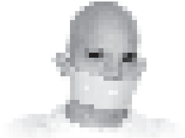

जिस व्यक्ति में कार्य करने का
उत्साह और साहस होता है,
वह अवस्था से चाहे वृद्ध भी हो,
वस्तुतः वह युवक ही है।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

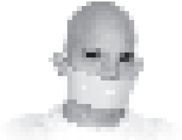

चिन्तनहीन निर्णय और
निर्णयहीन चिंतन
कारगर नहीं होते।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

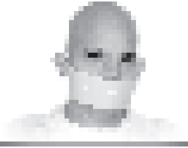

क्रियान्विति शून्य निर्णय और
निर्णय शून्य चिंतन
निष्पत्तिकारक नहीं होते।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

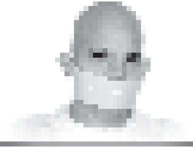

सत्य के प्रति अपना सम्पूर्ण समर्पण
करने वाला व्यक्ति
सत्य का साक्षात्कार कर सकता है।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

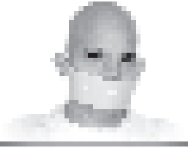

जो व्यक्ति अपने संवेगों और आवेगों पर
नियंत्रण नहीं कर सकता,
वह आत्मानुशासी नहीं हो सकता।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 **12** 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

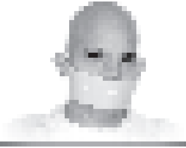

जो अपने पर अनुशासन नहीं कर सकता,
वह औरों पर अनुशासन कैसे करेगा ?

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 **13** 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

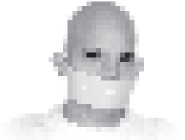

जो व्यक्ति
अपने पवित्र जीवन की पवित्रता के प्रति
जागरूक रहता है,
वह पाप से बच सकता है।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

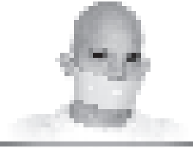

समुद्र में कितनी गंभीरता होती है,
यदि उसमें एक चट्टान भी डाल दी जाए तो
वह उसे भी समाविष्ट कर लेता है।
किन्तु घड़े पर एक कंकर भी फेंका जाता है तो
वह घड़े को नष्ट कर सकता है।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

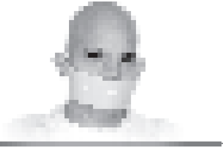

केवल इसी (वर्तमान जीवन) को मत देखो।
उस (परलोक) को भी देखो।
उसको भी क्या परम (मोक्ष) को देखो।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

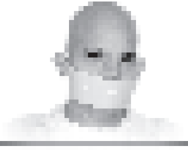

यदि शांतिमय जीवन जीना है
तो धोखा, बेईमानी को छोड़कर
ऋजुता व सरलता को स्वीकार करो।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

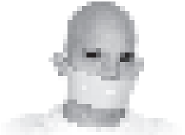

मृत्यु से डरना तो नहीं चाहिए पर
उसका स्मरण कर
धर्म की दृष्टि से
विशेष जागरूक अवश्य बनना चाहिए।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 **18** 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

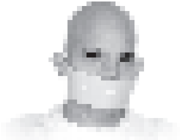

वे लोग धन्य हैं,
जो सदा शान्त रहते हैं और
जिनके चेहरे पर हर परिस्थिति में
मुस्कान देखने को मिलती हैं।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

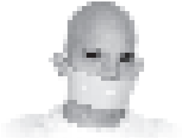

सहना चाहिए,
मौके पर कहना भी चाहिए और
शांति के साथ रहना चाहिए।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

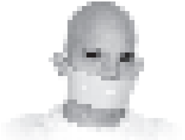

नम्रता एक ऐसा आधारभूत तत्त्व है,
जिसके सहारे अध्यात्म का
बहुमंजिला महल खड़ा किया जा सकता है।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

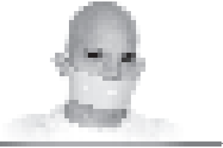

मार्ग की संपूर्ण जानकारी हो तथा
व्यक्ति सम्यक् दिशा में चले तो
वह अपनी मंजिल को प्राप्त कर सकता है।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

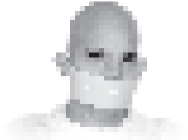

अपनी दुर्वृत्तियों से
लड़ने की रणनीति बनाओ।
डटकर लड़ो।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

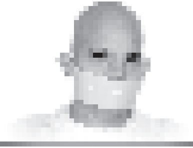

आवश्यकतापूर्ति की मांग को
असंगत नहीं कहा जा सकता।
किन्तु महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति और
वह भी अवैध तरीकों से
समुचित कैसे हो सकती है?

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

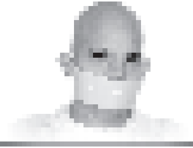

आलोचना से नहीं,
गलत कार्य से डरो।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

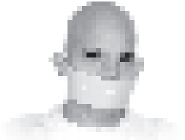

आलोचना
अच्छे काम की भी हो सकती है,
गलत काम की भी हो सकती है।
गलत काम की होने वाली आलोचना की
परवाह न करना गलत है।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

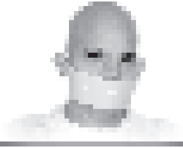

अपनी कमजोरी को स्वीकार कर
उसे परिमार्जित करने का प्रयास करो।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

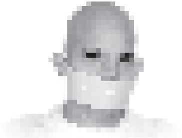

कम बोलने में कितना आनंद है,
उसका अनुभव वही कर सकता है,
जिसने वाणी-संयम का अभ्यास किया है।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

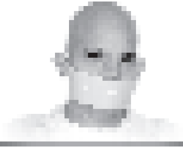

दूसरों की बातें सुनलो भले
पर करो वही
जो तुम्हारा विवेक कहे।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 **29** 30 31

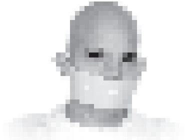

प्रतिकूल परिस्थितियों को सहना
अपेक्षाकृत सरल है,
किन्तु मनोनुकूल स्थितियों में
मन का संयम रखना कठिन होता है।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 **30** 31

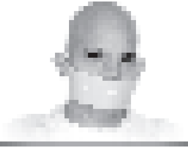

सत्य के मार्ग में
कठिनाइयां तो आ सकती हैं,
किन्तु जो आत्मतोष और प्रसन्नता
एक सत्यसंकल्पी व्यक्ति को प्राप्त होती है,
वह अनिर्वचनीय है।

अक्टूबर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 **31**

नवम्बर

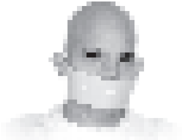

जिसके कषाय मर जाते हैं,

दोष विलीन हो जाते हैं,

वह मरकर भी अमर हो जाता है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

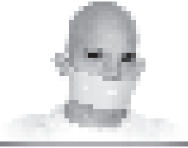

धन से सुविधाओं और
भौतिक सुख की प्राप्ति हो सकती है,
किन्तु शाश्वत सुख की प्राप्ति
धर्म से ही संभव है।

नवम्बर

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

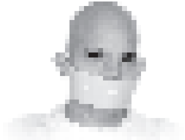

पदार्थ हो या प्राणी,
जो उपयोगी होता है,
वही मूल्यवान् होता है।

नवम्बर

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

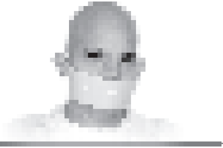

अनावेश, अनाग्रह और गहराई
की स्थिति में होने वाला चिन्तन
सम्यक् होता है।

नवम्बर

01 02 03 **04** 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

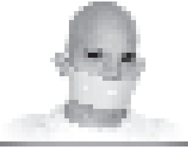

यदि जीवन में संयम
अवतरित हो जाता है
तो व्यक्ति सुखमय जीवन जी सकता है।

नवम्बर

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

एक तरफ व्यक्ति जानता है कि
इस जिन्दगी का पल भर भी भरोसा नहीं है,
दूसरी ओर धार्मिक आराधना के संदर्भ में
उसका चिन्तन होता है,
आज नहीं कल करूंगा।
यह कैसी विसंगति है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

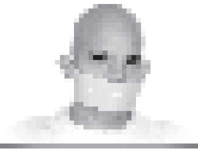

ईमानदारी वह मार्ग है,
जिस पर चलने वाले
व्यक्ति का भी भला होता है और
समष्टि का भी भला होता है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

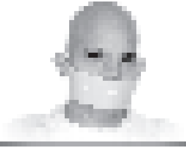

सत्य को
स्वीकारने का साहस भी
महानता है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

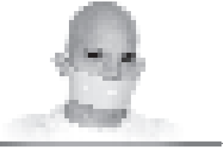

गति से पूर्व
गन्तव्य का ज्ञान आवश्यक है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

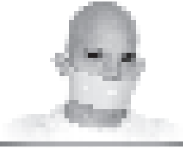

जो व्यक्ति वर्तमान में
संतुष्ट रहता है,
वह जीवित अवस्था में भी
मुक्त हो जाता है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

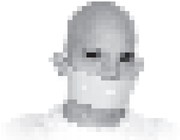

अनीति के पथ पर
चलने वाला व्यक्ति
जीवन में सफल नहीं होता।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

व्यक्ति की जीवन बगिया
सदाचार के सुमनों से सुरभित रहे और
उसके निकट आने वाले व्यक्ति को भी
सुगन्ध प्राप्त होती रहे।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 **12** 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

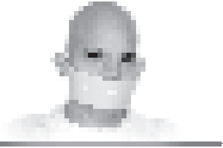

दूसरों का भला कर उसे भूल जाओ।
तुम्हारा भला करना प्रकृति याद रखेगी।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 **13** 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

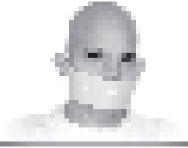

अभिभावक और शिक्षक
अपने व्यवहार, वाणी और जीवनशैली से
बच्चों को संस्कार दें तो
एक अच्छी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

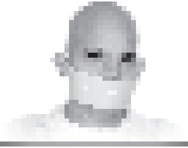

क्रांति के लिए
भ्रांति से मुक्त रह कर
शांति में रहते हुए
कष्ट झेलने का साहस रखना आवश्यक है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

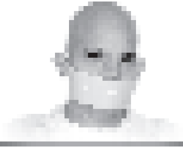

मिलनसारिता एक सद्गुण है
जो सामाजिक जीवन में बहुत उपयोगी है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

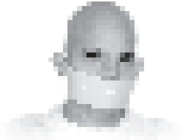

विकास के इच्छुक व्यक्ति के लिए
आवश्यक है कि
वह अपने जीवन के अमूल्य
समय एवं श्रम को
स्वाध्याय में व्यतीत करे।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

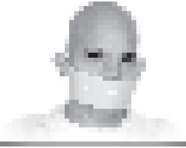

मांग करने वाला
कुछ भी कर सकता है पर
उसे पूरा करने से पहले
कसौटी आवश्यक है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 **18** 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

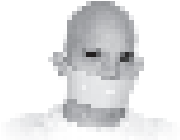

अनैतिकता और अनाचार से
उपार्जित धन
महत्त्वहीन होता है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

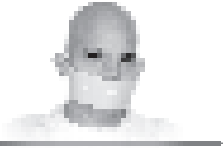

दुर्गुणों का वर्जन और
सद्गुणों का अर्जन
व्यक्ति को
विकास की ओर ले जाने वाला होता है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

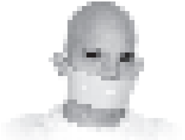

विवेक के अभाव में
शक्ति का दुरुपयोग भी हो सकता है,
इसलिए तुम अपने विवेक को जागृत करो।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

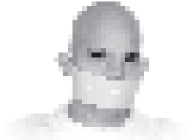

जो अभी तक जागे नहीं हैं,
उन्हें जागना चाहिए और
जो जाग चुके हैं,
उन्हें आलस्यवश, प्रमादवश
पुनः नहीं सोना चाहिए।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

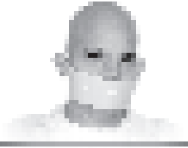

अपनी योग्यता को विकसित करो।
तुम आजन्म उपयोगी बने रह सकोगे।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

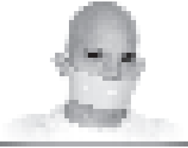

असहिष्णुता
पारस्परिक मैत्री की सरिता को
सुखा देती है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

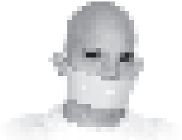

दृढ़संकल्पी के लिए
कुछ भी दुष्कर नहीं होता।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

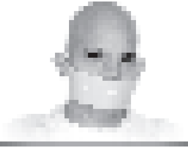

जब तक स्वस्थ हो,

तब तक जो करना हो सो कर लो

यानी अच्छा काम करलो।

पता नहीं देह में कब क्या

समस्या पैदा हो जाए।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

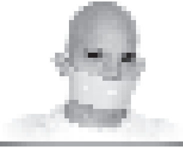

मनुष्य में जितनी क्षमता होती है,
उतना उसका उपयोग नहीं होता,
उसका एक कारण है
संकल्प का अभाव।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

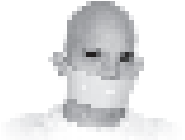

वे व्यक्ति महान् होते हैं,
जो स्वार्थ से उपरत होकर
परार्थ के लिए सोचते हैं, कार्य करते हैं।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

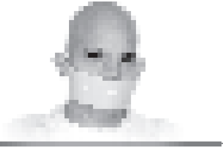

क्रोध एक प्रकार का विष है,
जो मैत्रीपूर्ण संबंधों को समाप्त कर देता है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 **29** 30 31

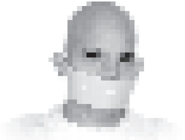

दूसरे शत्रु नुकसान करें या न करें,
किन्तु व्यक्ति में अहंकार है
तो वह उसका नुकसान कर लेता है।

नवम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 **30** 31

दिसम्बर

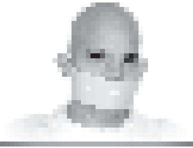

तात्कालिक आवेश और
अवैचारिक निर्णय
व्यक्ति को बहुत पीछे भी ढकेल सकता है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

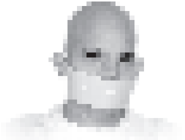

एक बार का अप्रिय व्यवहार भी
दिल को ठेस पहुंचाकर
वर्षों के बने हुए संबंधों को
क्षण भर में समाप्त कर सकता है।

दिसम्बर

01 **02** 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

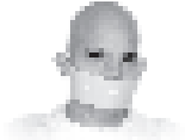

सत्यवादी के जीवन में संघर्ष तो आ सकते हैं,
किन्तु उसके पास इतना आत्मबल होता है कि
वह परास्त नहीं होता।

दिसम्बर

01 02 **03** 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

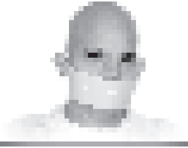

पारस्परिक हित चिन्ता और
सुख-दुःख में सहयोग के अभाव में
आत्मीयता समाप्त हो जाती है।

दिसम्बर

01 02 03 **04** 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

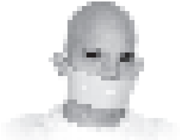

एक-दूसरे को जोड़नेवाला और
परस्पर मधुर संबंध
स्थापित करने वाला तत्त्व है
सेवाभाव।

दिसम्बर

01 02 03 04 **05** 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

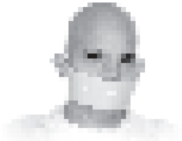

कल्पना जब तक कल्पना रहती है,
वह संकल्प नहीं बनती।
जब वह स्थिरता और निश्चिन्तता
तक पहुंच जाती है
तो संकल्प बन जाती है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 **06** 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

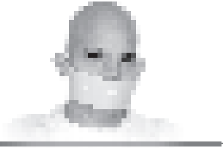

स्पष्ट कहो,
पर स्पष्ट सुनने की तैयारी भी रखो।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 **07** 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

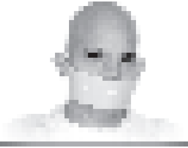

प्रवचन करना व उसे सुनना
दोनों ही कल्याणकारी है
बशर्ते कि उद्देश्य अच्छा हो।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 **08** 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

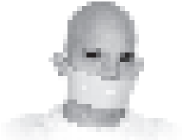

शरीररूपी नाव छोटी भले हो,
यदि भाव शुद्ध हो तो
यह संसाररूपी समुद्र से पार पहुंचा सकती है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 **09** 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

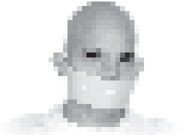

सच्ची बात, अच्छी बात
किसी ग्रन्थ, पन्थ और सन्त से मिले,
उसे सादर स्वीकार कर लो।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 **10** 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

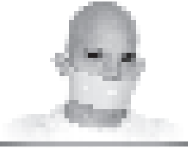

समता को लक्ष्य बनाने वाले व्यक्ति
प्रयास करते-करते
विषमता के पाश से मुक्त हो सकता है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 **11** 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

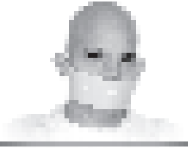

यावज्जीवन, पंच वार्षिक,
वार्षिक व मासिक
योजना बनाकर
समय का पूरा उपयोग करो,
निष्पत्ति प्राप्त हो सकेगी।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 **12** 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

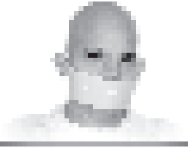

समझ शक्ति बढ़ गई और
सहनशीलता नहीं बढ़ी तो
मानना चाहिए
एक बड़ी कमी रह गई।

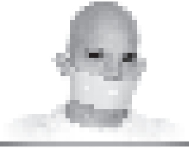

जितना-जितना राग और भोग बढ़ेगा,
उतना-उतना दुःख भी बढ़ेगा।
जितना-जितना वैराग्य और त्याग बढ़ेगा,
उतना-उतना आत्मिक सुख का अनुभव होगा।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 **14** 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

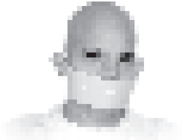

अन्तर्दृष्टि से झांककर
निर्णय लेना सीखो,
अधिक सफलता मिलने की संभावना है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 **15**

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

यदि व्यक्ति के जीवन में
साधना का बल है
तो व्याधि के रहने पर भी
वह अपनी समाधि को नहीं खोता।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

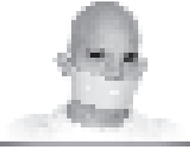

कमजोर नींव पर ऊंचा मकान
कैसे बन सकता है?
यदि विचारों में निराशा है, उदासीनता है
तो फिर सफलता कैसे मिलेगी?

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 **17** 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

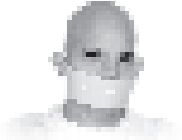

वाणी का असंयम
व्यक्ति के व्यक्तित्व को
बौना बनाने वाला होता है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 **18** 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

जिस युवक में संकल्प, साहस और
कुछ कर गुजरने की तमन्ना होती है।
वह परिस्थितियों के
सांचे में ढलना नहीं,
वक्त के सांचे को बदलना जानता है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 **19** 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

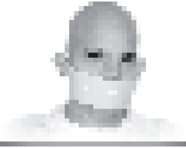

व्यक्ति प्रसन्नता का आकांक्षी रहता है, परन्तु
वास्तविक और स्थायी प्रसन्नता
तब प्राप्त हो सकती है,
जब आदमी समता का अभ्यास कर लेता है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 **20** 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

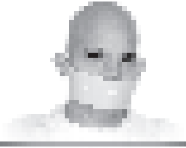

जहां दूसरे की हित चिन्ता होती है,
वहां शान्त सहवास होता है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 **21** 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

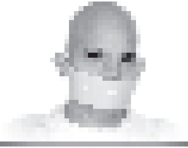

संगठन की सुदृढ़ता के लिए आवश्यक है
अनाग्रही चेतना का विकास।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 **22** 23 24 25 26 27 28 29 30 31

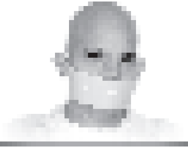

ईमानदारी
केवल व्यवसाय के क्षेत्र में ही नहीं,
आदमी के
हर आचार, विचार और
व्यवहार में होनी चाहिए।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 **23** 24 25 26 27 28 29 30 31

जीवन में त्याग बढ़ाओ,
राग कम होगा,
परम आनन्द मिलेगा।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 **24** 25 26 27 28 29 30 31

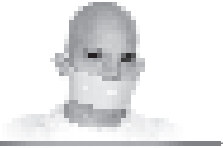

अति भोगी मत बनो,
जरा योगी भी बनो
ताकि रोगी बनने से कुछ मुक्ति मिल सके।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 **25** 26 27 28 29 30 31

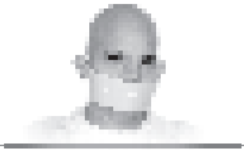

केवल शांति की नहीं,
शक्ति की भी उपासना करो।
तभी परिपूर्णता आएगी।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 **26** 27 28 29 30 31

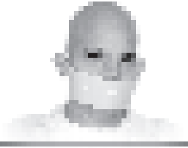

शांति बनाए रखने के लिए
सत्य को छोड़ देना उचित नहीं।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 **27** 28 29 30 31

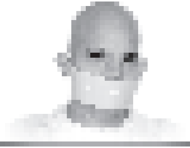

जहां सत्य है,
स्पष्टता है,
वहां निर्भीकता है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 **28** 29 30 31

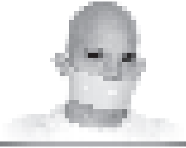

थोड़ा बोलो, पर सोचकर बोलो।
देखो, वह कितना असरदार होता है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 **29** 30 31

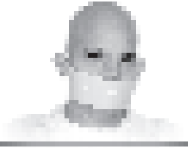

अगंभीर व्यक्ति के लिए
एक बात को भी पचाना मुश्किल होता है,
जबकि गंभीर व्यक्ति से
एक बात भी निकलवाना मुश्किल होता है।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 **30** 31

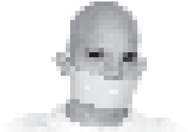

खोए हुए धन को
परिश्रम से पुनः प्राप्त किया जा सकता है,
विस्मृत ज्ञान को पुनः याद किया जा सकता है,
अस्वस्थ शरीर को दवा आदि के द्वारा
पुनः स्वस्थ बनाया जा सकता है,
किन्तु बीते हुए क्षण को
पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता।

दिसम्बर

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15

16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 **31**

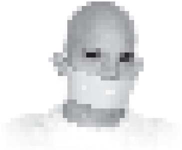

आचार्य महाश्रमण : एक परिचय

आचार्य महाश्रमण उन महान संत-विचारकों में से एक हैं जिन्होंने आत्मा के दर्शन को न केवल व्याख्यायित किया है, अपितु उसे जीया भी है। वे जन्मजात प्रतिभा के धनी, सूक्ष्मद्रष्टा, प्रौढ़ चिंतक एवं कठोर पुरुषार्थी हैं। उनकी प्रज्ञा निर्मल एवं प्रशासनिक सूझबूझ बेजोड़ है। एक विशुद्ध पवित्र आत्मा जिनके कार्यों में करुणा, परोपकारिता एवं मानवता के दर्शन होते हैं तथा जिनकी विनम्रता, सरलता, साधना एवं ज्ञान की प्रौढ़ता भारतीय ऋषि परम्परा की संवाहक दृष्टिगोचर होती है।

१३ मई, १९६२ को राजस्थान के एक कस्बे सरदारशहर में जन्मे एवं ५ मई, १९७४ को दीक्षित हुए आचार्य महाश्रमण अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ की परम्परा में तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

अध्यात्म, दर्शन, संस्कृति और मानवीय चरित्र के उत्थान के लिए समर्पित आचार्य महाश्रमण आर्षवाणी के साथ अध्यात्म एवं नैतिकता,

अनुकंपा और परोपकार, शांति और सौहार्द जैसे मानवीय मूल्यों एवं विषयों के प्रखर वक्ता हैं।

वे एक साहित्यकार, परिव्राजक, समाज सुधारक एवं अहिंसा के व्याख्याकार हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के साथ अहिंसा यात्रा के अनन्तर आपने लाखों ग्रामवासियों एवं श्रद्धालुओं को नैतिक मूल्यों के विकास, साम्प्रदायिक सौहार्द, मानवीय एकता एवं अहिंसक चेतना के जागरण के लिए अभिप्रेरित किया।

'चरैवेति-चरैवेति' इस सूक्त को धारण कर वे लाखों-लाखों लोगों को नैतिक जीवन जीने एवं अहिंसात्मक जीवन शैली की प्रेरणा देने के लिए पदयात्राएं कर रहे हैं।

अत्यन्त विनयशील आचार्य महाश्रमण अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान एवं अहिंसा प्रशिक्षण जैसे मानवोपयोगी आयामों के लिए कार्य कर तनाव, अशांति तथा हिंसा से आक्रांत विश्व को शांति एवं संयमपूर्ण जीवन का संदेश दे रहे हैं।

शांत एवं मृदु व्यवहार से संवृत्त, आकांक्षा—स्पृहा से विरक्त एवं जनकल्याण के लिए समर्पित युवा मनीषी आचार्य महाश्रमण भारतीय संत परम्परा के गौरव पुरुष हैं।

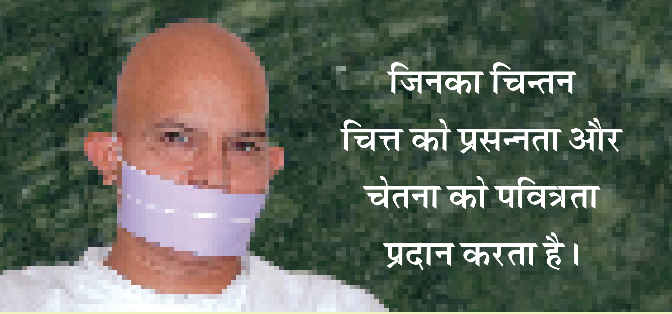

लक्ष्य की प्राप्ति का प्रसंग हो अथवा किसी समस्या के निराकरण का, किसी मार्गदर्शक की सलाह सफलता के द्वार खोल देती है।

आचार्य महाश्रमण द्वारा दी गई 'रोज की एक सलाह' आपकी जीवन यात्रा में मार्गदर्शक बनकर सुख, शान्ति और सफलता का पथ प्रशस्त कर सकेगी।

ISBN 81-7195-203-8
9 788171 952038
₹ 80.00